P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-5* ISSUE-8* April- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika

राजस्थान राज्य के भरतपुर जिले के विशेष सन्दर्भ में मद्यपान के कारण एवं दुष्परिणाम : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

बीरपाल सिंह ठैनुआं
असिस्टेण्ट प्रोफेसर,
समाजशास्त्र विभाग,
दयालबाग शिक्षण संस्थान,
दयालबाग, आगरा, उ0 प्र0

दीपमाला श्रीवास्तव
डीन,
समाज विज्ञान संस्थान,
आर्ट्स फैकल्टी,
डा0 भीमराव आम्बेदकर
विश्वविद्यालय,
आगरा, उ0 प्र0

पवन सिंह धाकड़
प्राचार्य,
पद्मनी देवी गर्ल्स कॉलेज,
वैर, भरतपुर

सारांश

मद्यपान एक मनोसामाजिक एवं शारीरिक व्याधिकीय स्थिति है, जो सभी समाजों में तथा सभी समयों में किसी न किसी रूप में विद्यमान रही है/ और आज भी है। मद्यपान के लिए निश्चित रूप से व्यक्ति के वैयक्तिक अनुभव, सांस्कृतिक, सामाजिक और आर्थिक कारक अनुकूल तत्व होते हैं। सांस्कृतिक वर्जनाएँ और मद्य–निषेध की नीति के कारण मदिरा की अनुपलब्धता कई व्यक्तियों को उसके प्रयोग के जोखिम से दूर रखती है। फिर भी मद्यपान की व्याख्या किसी एक कारक के आधार पर नहीं की जा सकती, अतः मद्यपान की व्याख्या एकल कारक उपागम के स्थान पर सम्पूर्णतावादी कारक उपागम के आधार पर की जा सकती हैं। वर्तमान में मद्यपान का उपागम यह है कि मद्यपान को चरित्र और प्रेरणा के सन्दर्भ में समझा जाने लगा है। मद्य–व्यसनी एक रोगी व्यक्ति होता है, उसे उपहास, हंसी, व्यंग या निन्दा से नहीं देखा जाना चाहिये। वह उस समय तक मनोग्रन्थियों, अभिवृत्तियों और आदतों का शिकार रहता है जब तक कि उसके आत्मनाश की प्रक्रिया अपरिहार्य नहीं हो जाती है।

मुख्य शब्द : मदिरा, मद्यपान, मद्यपता, मद्यसारिक, मद्यसार, मद्यपानकर्ता, व्यसनी, गैर–व्यसनी, चिर–कालिक व्यसनी, सोमरस, वारूणि, पय–शती।

प्रस्तावना

मद्यपान एक शारीरिक एवं मानसिक अवसाद है, यह निम्न स्नायविक प्रणाली की अपेक्षा उच्च मानसिक केन्द्र को अधिक तीव्रता से प्रभावित करता है। अवसाद के पूर्व यह तार्किक तथा अवरोध शक्तियों को प्रभावित कर देता है, जिससे कार्य करने की योग्यता तथा भावना की अभिव्यक्ति की क्षमता नष्ट हो जाती है। मद्यपान के शारीरिक प्रभावों जैसे– थकावट, हाथ पैरों में कम्पन्न, पैरों मे लड़खड़ाहट, बातचीत करने अस्पष्टता आदि। मद्यपान का प्रभाव मा़त्र मद्यपान व्यवहार तक ही सीमित नहीं है बल्कि यह सांस्कृतिक परम्पराओं और सामाजिक परिस्थितियों को भी प्रतिबिम्बित करता है। मुक्ति सेना के अध्यक्ष बूथ ने लिखा है–''किसी भी अन्य विष दण्ड से, जिसने पूरे विश्व में मृत्यु की लहर भेजी हो, शराब ने अधिक ही कहर ढाऐ हैं। इसने बहुत खून बहाए हैं, अनगिनत लोगों ने इसके कारण शोकवस्त्र पहना है, न जाने कितने घर बिक गए हैं, न जाने कितने लोगों से इसने बच्चों की हत्या करवायी है, इसने तमाम विवाह–विच्छेद किए हैं, न जाने कितने सीधे–सादे लोगों को इसने खराब बना दिया है, इसने बहुतों की आँखें छीन ली हैं, वहुतों के हाथ पैर जाते रहे हैं, वहुतों ने अपनी तर्क–शक्ति खो दी है, न जाने कितनों ने अपना पौरूष खो दिया है, कितनी ही स्त्रियों ने शर्म की जिन्दगी जी है, इस शराब ने बहुतों के दिल तोड़े हैं, बहुतों का जीवन बर्बाद किया है, न जाने कितनों को आत्महत्या करनी पड़ी है और न जाने कितनी ही कब्रें खोदनी पड़ी हैं (बूथ 1965)?'' इसलिए हम कह सकते हैं कि मद्यपान और सामाजिक बुराइयों के मध्य घनिष्ठ सम्बन्ध होता है।

समस्या का चयन

वर्तमान समय में मद्यपान की समस्या एक राष्ट्रीय समस्या के रूप में दिन–दुनी रात चौगुनी होती जा रही है। यद्यपि हमारे संविधान के नीति निर्देशक तत्वों में मद्य निषेध के निर्देश हैं, लेकिन आय की चिंता के कारण बहुत ही कम राज्य सरकारों ने मद्य निषेध नीति को लागू किया है। भरतपुर जिला राजस्थान राज्य के 33 जिलों में से एक है, 2011 की जनगणना के अनुसार जिले की जनसंख्या 25.5 लाख थी। राजस्थान में सन् 2015–16 में 6712.94 करोड़ रूपये आबकारी विभाग ने राजस्व के रूप में प्राप्त किये। राजस्थान

सरकार का यह तीसरा सबसे वडा राजस्व देने वाला विभाग है। आज की तारीख में विभिन्न राज्यों में कुल राजस्व का 7.6 प्रतिशत से 19.4 प्रतिशत तक शराब पर टेक्स से प्राप्त होता है (गुरूराज 2011)। लेकिन मद्यपान का स्वास्थ्य और समाज पर जो प्रभाव पडता है उसकी कीमत इस कर आय से बहुत अधिक है (बेनेगल तथा अन्य 2000)। हमारे पड़ोसी देश शराब को तस्करी के द्वारा भारत में पहुँचा रहे हैं और देश के नागरिकों को आदतन शराबी बनाया जा रहा है। पड़ोसी देशों द्वारा शराब की तस्करी से राष्ट्रीय कोष में हानि हो रही है। आज प्रजातान्त्रिक व्यवस्था के कारण देश में शराब–खोरी के प्रतिबन्ध और छूट की राजनीति से लोग सत्ता में आ जाते हैं और सत्ता से लुप्त हो जाते हैं। मद्यपान राजमार्गों पर दुर्घटनाओं का प्रमुख कारक भी है जससे हजारों लोगों की मृत्यु हो जाती है। शराब के अवैध कारोबार से आय का बड़ा भाग वेश्यावृत्ति, स्त्रीगमन, जुआ, सट्टा, लॉटरी खेलने पर खर्च किया जाता है, जिससे कानून व्यवस्था की भी समस्या उत्पन्न हो रही है। वर्तमान समय में मद्यपान से अपराध की दुनिया में वृद्धि हो रही है। अपराध की दुनियाँ में राजस्थान राज्य का भरतपुर जिला काफी अग्रणी है। भरतपुर जिले में घना पक्षी–विहार होने तथा बाँसी सफेद पत्थर के उत्पादन की मण्डी होने के कारण देशी–विदेशी व्यापारी व पर्यटक वर्ग के लोग भरतपुर जिले में आते हैं, व्यापारी व पर्यटक लोग होटल व रेस्टोरेन्ट में ठरहते हैं और मद्यपान करते हैं, होटल, रेस्टोरेन्ट, पत्थर की खानों व घना पक्षी विहार में कार्य करने वाले अधिकतर लोग श्रमिक वर्ग के हैं, जिन पर व्यापारी व पर्यटक वर्ग के लोगों की मद्यपान की आदत का सीधा प्रभाव पड़ता है। भरतपुर जिले में मद्यपानकर्ताओं की संख्या बढ़ने से अपराधों में वृद्धि हो रही है, जिसके कारण सामान्य जनता में असन्तोष व्याप्त हो रहा है। शराब की समस्या से पीड़ित होकर अव मद्यनिषेध की आवाज भी स्थानीय स्तर पर उठने लगी है। सितम्बंर 2017 में भरतपुर जिला के 16 गांवों की सोरोत गांव में पंचायत में नशामुक्ति की घोषणा की गयी तथा शराब के सेवन पर 11000 रूपये व बेचने पर 21000 रूपये दण्ड लगाने का निश्चय किया गया (हिन्दुस्तान टाइम्स 2017)।

मद्यपान की अवधारणा

मद्यपान किसी भी व्यक्ति की वह स्थिति है जिसमें पीने वाले व्यक्ति का मदिरा पीते समय उसकी मात्रा पर नियन्त्रण नहीं रहता है और वह नियमित रूप से और इतनी अधिक मात्रा में मदिरा पीता है, कि वह अपनी भूमिका एवं दायित्वों को भूलकर सामाजिक संसार की कार्य–पद्धति को नकारात्मक रूप से प्रभावित करता है। इस प्रकार मद्यपान से आशय व्यक्ति की वह व्याधिकीय दशा है, जो इसके द्वारा नशीले पेयों के लगातार एवं अत्यधिक सेवन से उत्पन्न होती है, इस दशा में व्यक्ति मद्यपान की आदत का शिकार हो जाता है। वह मद्यपान के लिए स्वयं को बाध्य समझता है। एक मानसिक रोगी की भाँति दिन–प्रतिदिन विकृतियों की ओर बढ़ता जाता है। यह अत्यधिक मद्य–व्यसन की वह स्थिति है, जिसमें व्यक्ति मानसिक विकृति का शिकार होने के साथ ही आर्थिक दृष्टि से भी दरिद्र हो जाता है, शारीरिक रूप से कमजोर एवं थका हुआ तथा वैयक्तिक रूप से विघटित व्यक्तित्व का व्यक्ति बन जाता है। सामाजिक प्रतिष्ठा खो बैठता है तथा नैतिक ह्रास के कारण एक प्रकार से विवेक शून्य हो जाता है। इग्लैंण्ड के भूतपूर्व प्रधानमन्त्री ग्लेड स्टोन ने एक वार शराब के बारे में कहा था कि ''युद्ध, अकाल तथा महामारी को भी मैं इतना भयंकर नहीं कह सकता जितना कि मद्यपान को।'' ऐतिहासिक पुराणों से पता चलता है कि समुद्र मन्थन के समय चौदह रत्नों में से एक रत्न मदिरा भी निकली थी, जिसका उपभोग राक्षसों के द्वारा ही किया जाता था। आर्यों के द्वारा भी सोमरस का पान किया जाता था, जिससे कि उनके शरीर में उत्तेजना बढ़ जाती थी। अधिकारिक रूप से वैसे तो भारत में शराब का सबसे कम सेवन करने वाले हैं। सन् 2000–2001 में भारत में प्रति व्यक्ति शराब का उपभोग विश्व में सबसे कम 0.82 लीटर प्रति व्यक्ति था, जबकि अमेरिका में 8.51 लीटर, कनाडा में 8.26 लीटर, यू के में 10.39 लीटर था (डब्लू एच ओ 2004), लेकिन भारत में 25 प्रतिशत शराब बिना रिकार्ड वाली पी जाती है (डब्लू एच ओ 2014)। यद्यपि आंकड़ों के अनुसार शराब का प्रति व्यक्ति उपभोग 1980 के पश्चात विकसित देशों में कम हुआ है तथा यह विकासशील देशों, जिनमें भारत भी सम्मिलित है, बढ़ा है (दास तथा अन्य 2006)। सरकारी आंकड़े बताते हैं कि भारत में 21 प्रतिशत पुरूष ओर 2 प्रतिशत महिलाएँ शराब का सेवन करती हैं, लेकिन इनमें से 20 प्रतिशत ऐसे पीने वाले हैं जिनकी कोई आय नहीं है। भारत में शराब के उपभोग में जो परिवर्तन दिखाई दे रहा है वह यह है कि महिलाऐं प्रतिदिन और अत्यधिक मात्रा में सेवन करने लगीं हैं (प्रसाद 2009)। महिलाओं में शराब उपभोग की दर भारत के विभिन्न भागों में 5.5 प्रतिशत से 10 प्रतिशत हो गयी है (मोहन तथा अन्य 2001)। दक्षिण पूर्व एशियाई देशों में, जिनमें भारत भी सम्मिलित है, कुल शराबियों में 76.6 प्रतिशत जीवन पर्यन्त पियक्कड़ हैं (डब्लू एच ओ 2014)।

साहित्यावलोकन

प्रस्तुत अध्ययन 'राजस्थान के भरतपुर जिले के विशेष सन्दर्भ में मद्यपान के कारण एवं दुष्परिणामों का एक समाजशास्त्रीय अध्ययन है। यद्यपि अध्ययन से सम्बन्धित मद्यपान विषय पर पर्याप्त साहित्य उपलब्ध है, लेकिन राजस्थान के संदर्भ में अत्यन्त ही कम साहित्य उपलब्ध है। जो भी साहित्य उपलब्ध है उसमें मद्यपान में विस्तृत आंकड़े उपलब्ध नहीं हैं, क्योंकि राजस्थान में बड़ी संख्या में बिना रिकॉर्ड की शराब का सेवन करने वाले हैं। इलियट तथा मैरिल (1941) ने शराबियों की विवेचना करके यह बताया है कि आदतन शराब पीने वाले व्यक्ति को पाँच अवस्थाओं से गुजरना पड़ता है। कास्टेयर (1979) ने अपने अध्ययन में राजस्थान में विभिन्न जातियों में शराब के उपयोग तथा उसके प्रति दृष्टिकोण पर अध्ययन किया। डेविड ड्रेसलर (1996) ने मद्यपान तथा मादक पदार्थों का सेवन करने वाले व्यक्तियों के बारे में लिखा है– कि लोग जाने–अनजाने में औषधि के रूप में या नींद के लिए इनका प्रयोग प्रारम्भ करते हैं और इसके आदी हो जाते हैं। इसी प्रकार पारिवारिक झंझटों या दिमागी तनाव को दूर करने के लिए भी इन वस्तुओं का

सेवन किया जाता है, ऐसे व्यक्ति जीवन की वास्तविकताओं को भुलाकर काल्पनिक जगत में विचरना अधिक पसन्द करते हैं। मद्यपान या नशाखोरी की आदत एक बार पड़ जाने के बाद उससे छुटकारा पाना बहुत ही कठिन होता है। आहूजा (2000) ने विद्यार्थियों का अध्ययन करके, मद्यपान के कारणों पर प्रकाश डाला। दास, बालकृष्णन तथा वासुदेवन (2006) ने अपने अनुसंधान में स्पष्ट किया कि दस्तावेजों के आंकड़ों के हिसाब से भारत में शराब के सेवन में तेजी से वृद्धि हो रही है। यहां मद्यपान में यह भी परिवर्तन दिखाई दे रहा है कि कभी कभार सेवन के स्थान पर समारोहात्मक मद्यपान बनता जा रहा है, शराब पीने का सामान्य उद्देश्य केवल पीना है। रिचर्ड, जेसोन तथा जाओना (2007) ने मद्यव्यसनी परिवारों का अध्ययन किया तथा पाया कि ऐसे परिवारों के बच्चों में अन्य परिवारों की तुलना में मद्यपान की संभावना 40 से 70 प्रतिशत अधिक होती है। बार्कले तथा स्टीवार्ट (2008) ने अपने अध्ययन में पाया कि जो लोग मद्यपान करते हैं उनका लिवर मॉसल होता है तथा जो व्यक्ति लगातार दस वर्षों तक मद्यपान करते हैं उनमें 30 प्रतिशत अधिक रोगों के संक्रमण की संभावना होती है। प्रसाद (2009) ने अपने अध्ययन में स्पष्ट किया कि अस्पतालों में भर्ती मरीजों में से 20 प्रतिशत मरीज मद्यपान के शिकार होते हैं। 18 प्रतिशत मनोवैज्ञानिक आकस्मिकताऐं, 20 प्रतिशत ब्रेन दुर्घटनायें, 60 प्रतिशत सभी प्रकार की दुर्घटनाओं में मद्यपान की भूमिका होती है। स्मिथ और रॉबिन्सन (2013) ने अपने अध्ययन में जेनेटिक्स तथा मद्यपान के मध्य संबंध को स्पष्ट किया तथा पाया कि अमेरिकन इण्डियंस तथा आलस्का के मूल निवासियों का मद्यपान की ओर अधिक झुकाव होता है क्योंकि उनका पारिवारिक इतिहास मद्यपान का रहा है।

अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन राजस्थान राज्य के भरतपुर जिले के विशेष सन्दर्भ में मद्यपान के कारण एवं दुष्परिणामों का एक समाजशास्त्रीय अध्ययन का मुख्य उद्देश्य मद्यपान के सामान्य कारण और प्रभावों का अध्ययन करना है। अध्ययन के अन्य उद्देश्य इस प्रकार हैं–

1. मद्यपान के वैयक्तिक कारकों का अध्ययन करना।
2. मद्यपान के वैयक्तिक प्रभावों का अध्ययन करना।

अध्ययन की उपकल्पना

उपयुक्त उद्देश्यों के आधार पर अध्ययन की निम्न उपकल्पनाएँ हैं–

1. अधिकांश मद्यपान विघटित व्यक्तित्व वाले व्यक्ति करते हैं।
2. मद्यपान के व्यक्ति पर शारीरिक एव मानसिक प्रभाव घातक होते हैं।

शोध–प्रचरना

प्रस्तुत अध्ययन राजस्थान के भरतपुर जिले का एक समाजशास्त्रीय अध्ययन है। अध्ययन में वर्णनात्मक एवं व्याख्यात्मक शोध–प्रचरना का प्रयोग किया गया है। जो कि मद्यपान के सम्बन्ध में पूर्ण व्याख्या करने में सक्षम हैं। उत्तरदाताओं के चयन हेतु शोध–विषय के अनुरूप स्नो वॉल निदर्शन–प्रणाली का प्रयोग कर 306 पुरुष उत्तरदाताओं का चयन किया गया। तथ्य संकलन की प्रविधि में साक्षात्कार अनुसूची का प्रयोग किया गया क्योंकि सूचनादाताओं में शिक्षित एवं अशिक्षित दोनों प्रकार के होने की वजह से सही तथ्य एकत्रित करने के लिए यह प्रविधि उचित थी। तथ्य संकलन के श्रोतों में प्राथमिक व द्वितीयक श्रोतों का प्रयोग किया गया।

मद्यपान के कारण एवं दुष्परिणाम

कार्य एवं कारण में घनिष्ठ सम्बन्ध है, जब व्यक्ति कोई भी कार्य सम्पादन करता है, तो उस कार्य सम्पादन की प्रक्रिया पूरी करने में अवश्य ही कोई न कोई कारण निहित होता है। उदाहरण स्वरूप हम भोजन करने का कार्य करते हैं, इससे शरीर को शक्ति प्रदान करने एवं जीवन को अक्षुण्ण बनाये रखने का कारण निहित होता है। हम धनोपार्जन का कार्य आवश्यकताओं की सम्पूर्ति हेतु करते हैं। यहाँ पर भी धन–उपार्जित करने के कार्य में, आवश्यकताओं की सम्पूर्ति का कारण निहित है। इसी प्रकार से भोजन करने एवं धनोपार्जन की प्रणालियाँ सभी व्यक्तियों में समान रूप से नहीं पाई जाती है। एक व्यक्ति निराभिष प्रणाली का भोजन ग्रहण करना पसन्द करता है। तो दूसरा आभिष प्रणाली का। इसी प्रकार एक व्यक्ति व्यापार करके धनोपार्जन करता है। तो दूसरा मजदूरी करके। भोजन और धनोपार्जन करने का कार्य दोनों ही व्यक्ति कर रहे हैं। परन्तु प्रणालियाँ भिन्न हैं ठीक इसी प्रकार से व्यक्तियों द्वारा मद्यपान करने का कार्य भी विभिन्न कारणों पर निर्भर करता है तथा इसकी प्रणालियाँ भी भिन्न हो सकती हैं। यद्यपि मद्यपान सदैव अपराध का कारण नहीं बनता, परन्तु मद्यपान की अधिकता अथवा आवश्यकता से अधिक मद्यपान पर निर्भरता प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से मानव व्यवहार को दुष्परिणाम की ओर ले जाने में सहायक है, यह बात भी लगभग सर्वमान्य ही है। मद्यपान का दुष्परिणाम व्यक्ति, परिवार एवं समाज पर किसी न किसी रूप में अवश्य ही पड़ता है। मद्यपान का दुष्परिणाम व्यक्ति के व्यक्तिगत जीवन पर तो पड़ता ही है, साथ ही साथ उसका परिवार, उसके बच्चे एवं तत्पश्चात् समाज भी बिना प्रभावित हुए नहीं रहता। मद्यपान का प्रभाव मुख्य रूप से तीन प्रकार से पड़ता है–प्रथम, आर्थिक रूप से मद्यपानकर्ता की स्थिति खराब हो जाती है। द्वितीय, सामाजिक रूप से जो प्रभाव पड़ता है उसका प्रारम्भ परिवार के सदस्यों से तनाव सम्बन्धों में होता है। मद्यपान का तीसरा प्रभाव, शारीरिक रूप से पड़ता है। अधिक मद्यपान शरीर की कोशिकाओं को पहले प्रभावित करता है, वह क्षतिग्रस्त होने लगती हैं तथा इसकी परिणति भी जीवन के अन्त के रूप में होती है। प्रस्तुत अध्ययन के अन्तर्गत मद्यपान के कारणों एवं दुष्परिणामों में व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक व अन्य कारणों के अतिरिक्त मद्यपान के दुष्परिणामों से सम्बन्धित विस्तृत सूचनाएँ प्रस्तुत की गयी हैं।

सारणी : 01

मद्यपान के प्रमुख कारक

संख्या : 306

क्र0 सं0	कारक	संख्या	प्रतिशत (%)
1.	व्यक्तिगत	305	99.67
2.	पारिवारिक	228	74.50
3.	सामाजिक	284	92.81
4.	आर्थिक	260	84.96
5.	राजनैतिक	131	42.81
6.	धार्मिक एवं सांस्कृतिक	282	92.15
7.	ऐतिहासिक	07	2.28
8.	अन्य	193	63.07

उपरोक्त तालिका 01 से स्पष्ट है कि 306 सूचनादाताओं में से सर्वाधिक 305 (99.67%) सूचनादाता व्यक्तिगत कारकों से मद्यपान करने वाले थे, तत्पश्चात् 228 (74.50%) सूचनादाताओं के द्वारा पारिवारिक कारकों से मद्यपान किया गया। 284 (92.81%) सूचनादाताओं ऐसे पाये गये जिन्होंने सामाजिक कारकों से मद्यपान किया था। इसके अतिरिक्त 260 (84.96%) सूचनादाताओं के द्वारा आर्थिक कारकों से मद्यपान किया। 131 (42.81%) सूचनादाताओं के द्वारा राजनैतिक कारकों से मद्यपान किया। 282 (92.15%) सूचनादाताओं के द्वारा धार्मिक एवं सांस्कृतिक कारकों से मद्यपान किया। सबसे कम 07 (2. 28%) सूचनादाताओं के द्वारा ऐतिहासिक कारकों से मद्यपान किया था और 193 (63.07%) सूचनादाताओं के द्वारा अन्य कारकों से मद्यपान किया गया।

सारणी : 02

मद्यपान के वैयक्तिक कारण

संख्या : 306

क्र0 सं0	वैयक्तिक कारण	संख्या	प्रतिशत
1	पारिवारिक कारण /तनाव	154	50.32
2	शारीरिक परेशानी / बीमारी	150	49.01
3	मानसिक तनाव / परेशानी	129	42.15
4	व्यापार/नौकरी में परेशानी व कठिनाई	120	39.21
5	शौक–शौक में/बिना किसी कारण के	100	32.67
6	समाज में अपमान	100	32.67
7	अन्य कारण	124	40.52

उपर्युक्त सारणी संख्या 02 से स्पष्ट है कि आधे उत्तरदाताओं (50.32 प्रतिशत) ने स्वीकार किया कि उन्होंने पारिवारिक कारणों से मद्यपान किया करते हैं। लगभग इतने ही उत्तरदाताओं (49.01 प्रतिशत) ने शारीरिक परेशानियों को मद्यपान का कारण माना जबकि 42.15 प्रतिशत उत्तरदाता ऐसे भी थे जिन्होंने मानसिक तनाव को मद्यपान के लिए उत्तरदायी माना। 39.21 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कहा कि व्यापार में हानि व नौकरी सम्बन्धी परेशानी के कारण उन्होनें मद्यपान किया व करते हैं। एक तिहाई उत्तरदाता (32.67 प्रतिशत) बिना किसी कारण के शराब पीते हैं जबकि इतने ही उत्तरदाता (32.67 प्रतिशत) सामाजिक अपमान के कारण मद्यपान करते हैं। 40.52 प्रतिशत उत्तरदाता अन्य कारणों जैसे अत्यधिक मेहनत करने, नीद लाने व थकान दूर करने आदि कारण से मद्यपान करते हैं।

सारणी : 03

मद्यपान के दुष्परिणाम

सख्या : 306

क्र0 सं0	दुष्परिणाम	संख्या	प्रतिशत (%)
1.	आर्थिक	237	77.45
2.	मानसिक	81	26.47
3.	शारीरिक	116	37.90
4.	सामाजिक	71	23.20
5.	गृह–कलह	101	33.00
6.	अन्य	08	2.61

उपरोक्त तालिका 03 से स्पष्ट है कि 306 सूचनादाताओं में से सर्वाधिक 237 (77.45%) सूचनादाताओं को मद्यपान करने से आर्थिक दुष्परिणाम भुगतने पड़े थे, इसके अतिरिक्त 81 (26.47%) सूचनादाताओं को मद्यपान करने से मानसिक दुष्परिणामों का सामना करना पड़ा। 116 (37.90%) सूचनादाताओं ने मद्य–व्यसन करने से शारीरिक परिणाम भुगते, 71 (23.20 %) सूचनादाताओं को मद्यपान करने से सामाजिक दुष्परिणामों का सामना करना पड़ा, तत्पश्चात् 101 (33.00%) सूचनादाताओं को मद्य–व्यसन करने से गृह–कलह की समस्या का सामना करना पड़ा। 08 (2.61%) सूचनादाताओं को मद्यपान से अन्य दुष्परिणामों का सामना करना पड़ा।

सारणी : 4

मद्यपान के वैयक्तिक प्रभाव

संख्या : 306

क्र0 सं0	वैयक्तिक प्रभाव	संख्या	प्रतिशत
1	आर्थिक हानि	255	83.66
2	शारीरिक क्षरण	230	75.16
3	मानसिक परेशानी	190	62.91
4	पारिवारिक संबन्धों का तनावपूर्ण होना	186	60.78
5	सामाजिक प्रतिष्ठा को ठेस	120	39.21
6	नाते–रिश्तेदारी में बदनामी/विश्वास में कमी	108	35.29
7	बच्चों का भविष्य अनिश्चित होना	98	32.02
8	पडोसियों से तनावपूर्ण संबध	80	26.14
9	अन्य प्रभाव	131	42.81

उपर्युक्त सारणी 04 से स्पष्ट है कि 83.66 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बताया कि मद्यपान के कारण उन्हें आर्थिक हानि हुई है। तीन चौथाई उत्तरदाताओं (75.16 प्रतिशत) को मद्यपान के कारण आर्थिक हानि हुई है, 62.91 प्रतिशत उत्तरदाता को मानसिक परेशानी हुई है। 60.78 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बताया कि मद्यपान के कारण उनके पारिवारिक संबन्ध तनाव पूर्ण हुए हैं। 39.31

प्रतिशत उत्तरदाओं ने उत्तर दिया कि शराब का सेवन करने से उनकी सामाजिक प्रतिष्ठा को ठेस लगी है। लगभग एक तिहाई उत्तरदाता (35.29 प्रतिशत) ने स्वीकार किया कि शराब का सेवन करने के कारण नाते–रिश्तेदारों द्वारा उनके प्रति विश्वास में कमी आयी। लगभग इतने ही उत्तरदाताओं (32.02 प्रतिशत) ने बताया कि मद्यपान के कारण उनके बच्चों का भविष्य अनिश्चित हुआ है। 26.14 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने स्पष्ट किया कि मद्यपान के कारण उनके पड़ोसियों से सम्बन्ध तनावपूर्ण हुए हैं तथा 42.81 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बताया कि वे मद्यपान करने से अनेको रूप में प्रभावित हैं।

निष्कर्ष

मद्यपान अथवा मदिरा का व्यसन कोई नई बात नहीं है, क्योंकि मद्यपान आदिकाल से ही संसार के प्रत्येक देश या समाज में किसी न किसी रूप में पाया जाता रहा है। वर्तमान समय में दुनियां भर में शराब का अभिशाप करोड़ों लोग झेल रहे हैं, आंकड़े बताते हैं कि किसी भी समाज में दस फीसदी भारी पियक्कड़ शराब की कुल खपत का करीब आधे से ज्यादा हिस्सा पी जाते हैं और ये व्यक्ति अपने परिवार और समाज के लिए समस्या बन जाते हैं। स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् भारत में शराब का नशा बहुत तेजी से लोकप्रिय हुआ। लोग उसके खतरनाक प्रभावों से परिचित होते हुए भी गली, मोहल्ला, चौराहे व गन्दी बस्तियों की शराब की दुकानों पर मद्य–व्यसनियों की पंक्तियाँ में बैठकर ऐसे शराब पीते हैं जैसे कि गॉव की शादी की दावत में ठण्डाई पी रहे हैं। श्रमिक, विचलित व्यक्ति, कमजोर वर्ग लोगों ने अपने जीवन का सहारा समझ के शराब के उपभोग की मात्रा में वृद्धि की है। सरकार एक तरफ शराब के उपयोग पर प्रतिबन्ध लगा रही है, दूसरी तरफ शराब के ठेका उठाकर शराब के प्रचलन को बढ़ा रही है। समाज ने शराब को सामाजिक मान्यता दे दी हैं जिससे कि युवा वर्ग शराब को फैशन के रूप में उपभोग में लाने लगा है। जिससे कि समाज में अपराधों की संख्या में भारी वृद्धि हो रही है तथा आम नागरिक के दिन प्रतिदिन के क्रिया कलापों मे कठिनाई उत्पन्न हो रही है।

अध्ययन के आधार पर यह स्पष्ट हुआ है कि राजस्थान राज्य के भरतपुर जिले में मद्यपान के कारणों में सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक एवं वैयक्तिक प्रमुख हैं। व्यक्तिगत कारणों में आर्थिक हानि या नौकरी सम्बन्धी परेशानी, शारीरिक परेशानी या बीमारी, मानसिक परेशानी व शराब का आसानी से उपलब्धा होना प्रमुख हैं। जबकि व्यक्ति पर इसके व्यक्तिगत प्रभावों में आर्थिक हानि, पारिवारिक तनाव व गृह कलेश, पड़ोसियों से तनावपूर्ण सम्बन्ध व शारीरिक दुर्बलता व बीमारियां प्रमुख हैं। अध्ययन के आधार पर ऐसा लगता है–

'दबा ज्यों–ज्यों दी गयी, त्यों–त्यों वढता ही गया मर्ज। बोझ हल्का करने के लिए पी थी, लेकिन बढ़ता ही गया कर्ज।।'

जिन कारणों व समस्याओं से निजात पाने के लिए शराब का सेवन शुरू किया गया, शराब के सेवन से वे समस्याएँ और बढ़ती चली गयीं तथा व्यक्ति मद्यपान रूपी गहरे उस दल–दल में फस गया जिससे निकलना आसान न हो सका।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *आहूजा, राम (2000), सामाजिक समस्याएँ, जयपुर एवं नई दिल्लीः रावत पब्लिकेशन्स।*
2. *Aishammari, M. (2015). Alcohol and its Impact on the Individual and Society. International Journal of Business and Social Service. Vol. 6. No.2. Feb. 2015.*
3. *Barclay, C. A. & Stewart, C.P. (2008). Adverse Physical Effects of Alcohol Misuse. Quoted by Aishammari, M. (2015). Alcohol and its Impact on the Individual and Society. International Journal of Business and Social Service. Vol. 6. No.2. Feb. 2015.*
4. *Benegal, V. et al. (2000). Social Cost of Alcoholism. Banglore: Nimhans Journal. 18. 2000.*
5. *Booth Quoted by C. B. Mamoria. (1965). Social Problems and Disorganization in India. Allahabad: Kitab Mahal.*
6. *Carstairs, G. M. (1979). Daru and Bhang: Cultural Factors in the Choice of Intoxication. in. Marshal, M. (Ed). Beliefs, Behaviours and Alcoholic Beverages: A Cross Cultural Survey. Ann Arbor: University of Michigan Press.*
7. *Das, S. K. et al (2006). Alcohol: Its Health and Social Impact in India. The National Medical Journal of India. Vol. 19. No.2.*
8. *Dreslor Quoted by Paranjape, N.V. (1996). Readings in Criminology & Penology. Allahabad: Central Law Pubication.*
9. *Elliot, M. A, and Merrill, F.E. (1941). Social Disorganization. USA: Harper & Brothers Publication.*
10. *Gururaj, G. et al (2011). Alcohol Related Harms. Implications for Public Health and Polity in India. Publication No. 73, Banglore: NIMHANS.*
11. *Hindustan Times. (2017). Sep 10. https://m.hindustantimes.comjaipur/16-villages-in-bharatpur-ban-alcohol.*
12. *Mohan, D. et al. (2001). Alcohol Consumption in India: A Cross Section Study. in Demers, A. et al. (ed.). Survey of Drinking Patterns and Problems in Seven Developing Countries. Geneva: World Health Organization.*
13. *Prasad, R. (2009). Alcohol use on the Rise in India. www.thelancet.com. Vo. 373. January 3, 2009.*
14. *Richard, F. F. et al. (2007). Inhibiting Irrevant in Adult Children of People with Alcoholism. The Journal of Psychology. Vol. 141. No. 2.*
15. *Samule, S. Quoted by Levely Herman (1951). Drinks. London: Roultledge & Egam Paul.*
16. *Smith, M.A. & Robinson, L. (2003). Signs, Symptoms and Help for Alcoholims and Alcohol Use Problems. Alcoholims and Alcohol Abuse. Vo. 4.*
17. *World Health Organization. (2004). Global Status Report on Alcohol 2014. World Health Organization. Geneva: Department of Mental Health and Substance Abuse.*
18. *World Health Organization. (2014). Global Status Report on Alcohol 2014. World Health Organization. Geneva: Department of Mental Health and Substance Abuse.*